पुराना घर

पुराना घर

यह कहानी उन बच्चों के मन को छू जायेगी जिन्हें लगता है कि कभी-कभी उनकी उपेक्षा की गई थी.

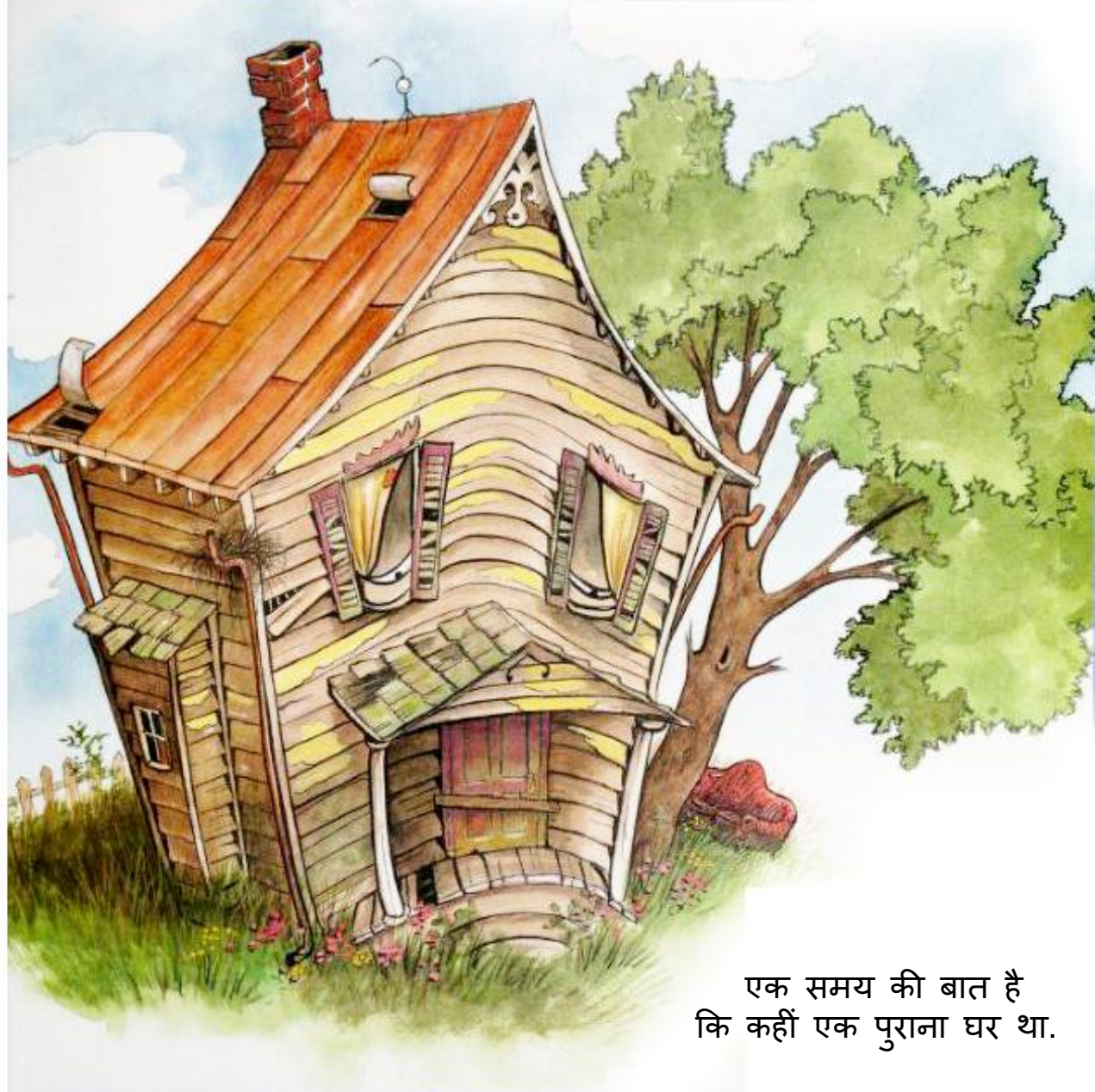

एक समय की बात है
कि कहीं एक पुराना घर था.

पुराना घर बहुत अकेला था क्योंकि लंबे समय से उस घर में कोई रह नहीं रहा था.

उस घर के जर्जर फाटक के सामने से जब लोग गुज़रते थे तो वह एक दूसरे से कहते थे, “क्या कभी तुमने इतना दुःखी घर कहीं देखा है?”

"तुम उपकारी भी हो," गिलहरी ने कहा. "तुम्हें हमेशा याद रहता है कि मैंने नट्स कहाँ छिपा कर रखे थे."

उसके मित्र उसका मन बहलाने का प्रयास करते थे.

"तुम कितने उपयोगी हो," पक्षी कहते. "तुम्हारे सूराख हमारे घोंसलों के लिए बहुत सुविधाजनक हैं."

"तुम्हारा सहन हमारे लिए बिलकुल उपयुक्त है," जंगली फूलों ने कहा. "यह कितना सुंदर है. तुम्हारे बिना हम सब क्या करते?"

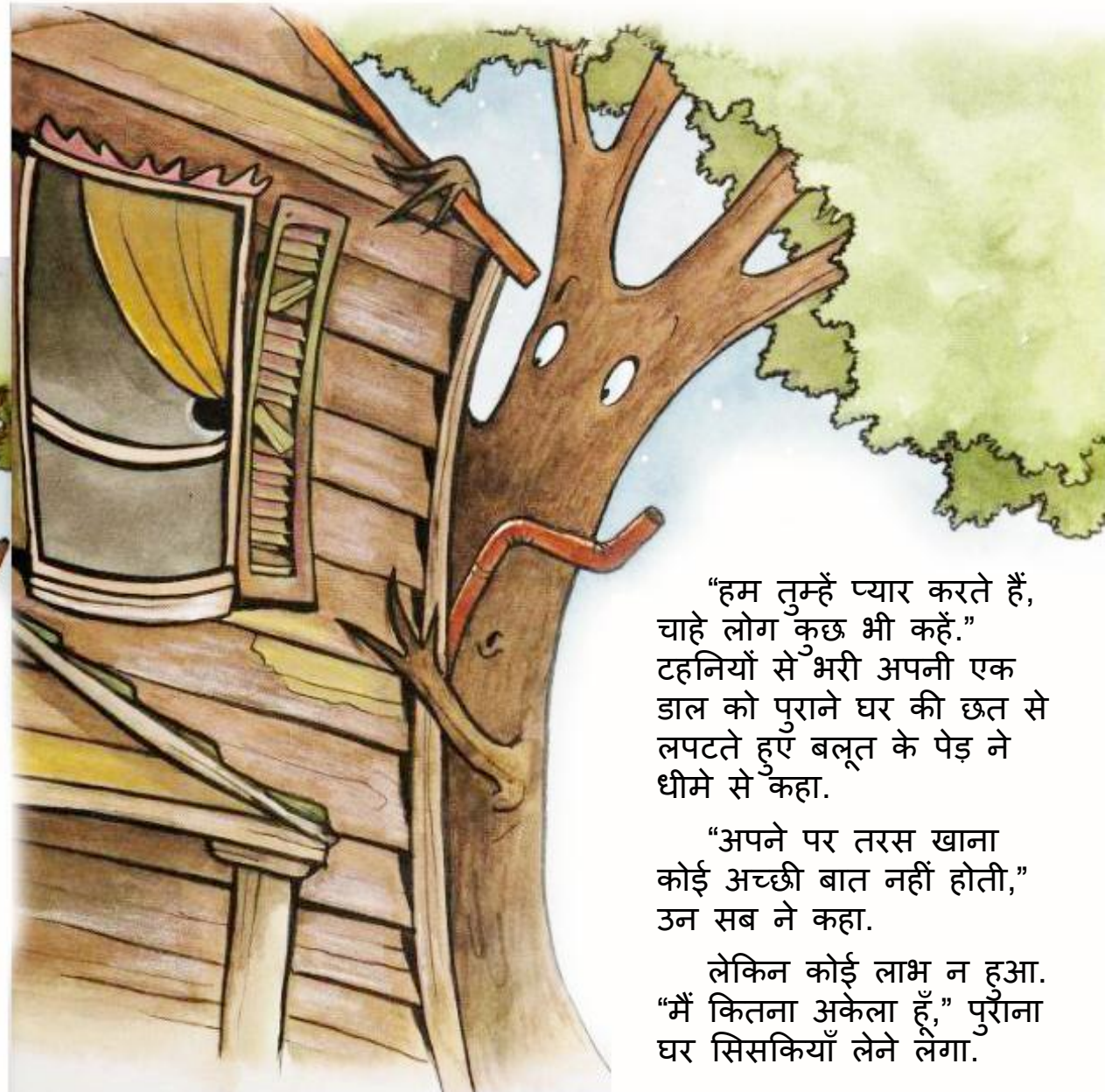

"हम तुम्हें प्यार करते हैं, चाहे लोग कुछ भी कहें." टहनियों से भरी अपनी एक डाल को पुराने घर की छत से लपटते हुए बलूत के पेड़ ने धीमे से कहा.

"अपने पर तरस खाना कोई अच्छी बात नहीं होती," उन सब ने कहा.

लेकिन कोई लाभ न हुआ. "मैं कितना अकेला हूँ," पुराना घर सिसकियाँ लेने लगा.

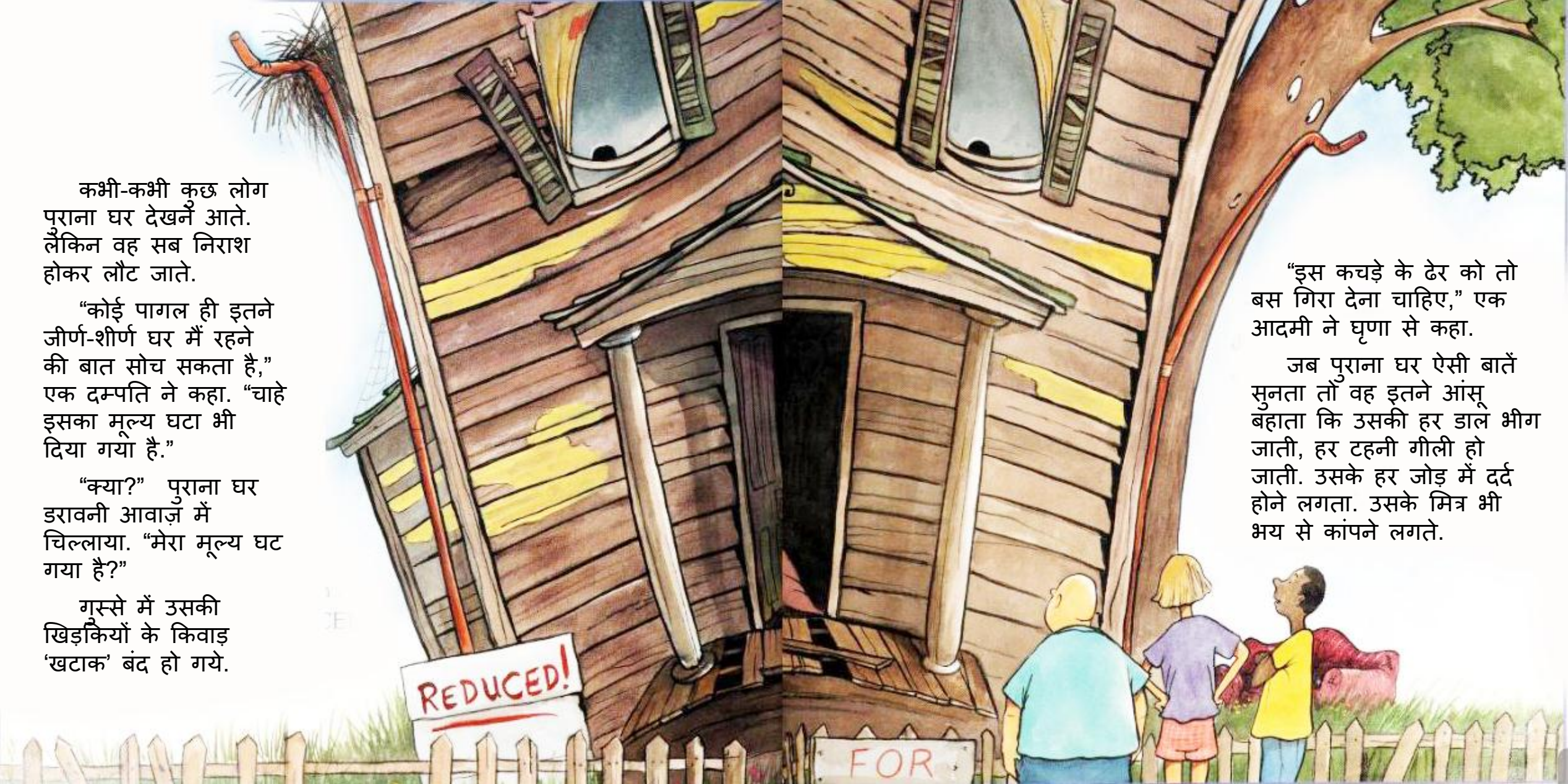

कभी-कभी कुछ लोग पुराना घर देखने आते. लेकिन वह सब निराश होकर लौट जाते.

“कोई पागल ही इतने जीर्ण-शीर्ण घर मैं रहने की बात सोच सकता है,” एक दम्पति ने कहा. “चाहे इसका मूल्य घटा भी दिया गया है.”

“क्या?” पुराना घर डरावनी आवाज़ में चिल्लाया. “मेरा मूल्य घट गया है?”

गुस्से में उसकी खिड़कियों के किवाड़ ‘खटाक’ बंद हो गये.

“इस कचड़े के ढेर को तो बस गिरा देना चाहिए,” एक आदमी ने घृणा से कहा.

जब पुराना घर ऐसी बातें सुनता तो वह इतने आंसू बहाता कि उसकी हर डाल भीग जाती, हर टहनी गीली हो जाती. उसके हर जोड़ में दर्द होने लगता. उसके मित्र भी भय से कांपने लगते.

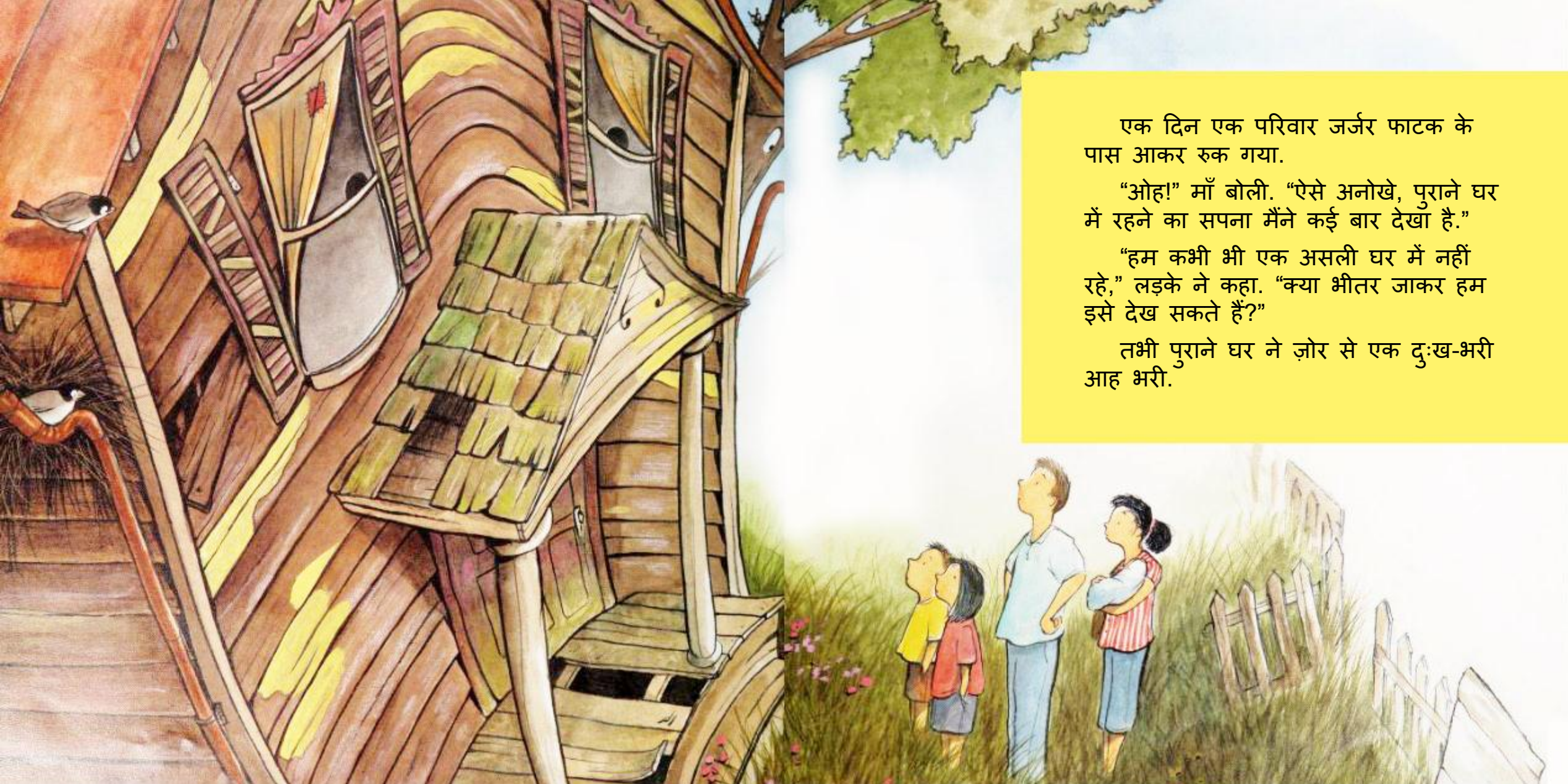

एक दिन एक परिवार जर्जर फाटक के पास आकर रुक गया.

“ओह!” माँ बोली. “ऐसे अनोखे, पुराने घर में रहने का सपना मैंने कई बार देखा है.”

“हम कभी भी एक असली घर में नहीं रहे,” लड़के ने कहा. “क्या भीतर जाकर हम इसे देख सकते हैं?”

तभी पुराने घर ने ज़ोर से एक दुःख-भरी आह भरी.

“उह-हा, यह कैसी आवाज़ थी?” पिता ने कहा. “मुझे लगता है कि यह सड़ रहा है.”

“नहीं!” छोटी लड़की ने चिल्ला कर कहा. “यह हमें हेलो कहा रहा है, बस इतना ही है.”

“हे,” गिलहरी ने धीमे से पुराने घर को कहा. “क्या तुम ने उनकी बात सुनी? तुम्हारे लिए यह अच्छा अवसर है!”

लेकिन पुराने घर ने नाक चढ़ा कर कहा, “देखो! दूसरों की तरह वह भी वापस जा रहे हैं,”

लेकिन अगले सप्ताह वह परिवार फिर वहाँ आया. सब बड़ी ललक के साथ उस घर को देखने लगे.

"यहाँ पर मैं टायर लटका कर झूला बना लूंगा," लड़के ने बलूत के पेड़ की ओर देखते हुए कहा.

"पक्षियों के घोंसलों को तो देखो," माँ बोली. "इस घर ने अपने मित्रों को कितनी जगह दे रखी है."

"मैं इन जंगली फूलों के आसपास उग रही घास को निकाल दूंगी," छोटी लड़की ने कहा. "फिर इन फूलों को खूब धूप मिलेगी."

“क्या तुम्हें लगता है कि घर एक ओर झुका हुआ है?” पिता ने पूछा. “मुझे संदेह है कि कहीं इसकी नींव न टूटी हो.”

“क्षमा करें!” पुराना घर गुस्से से चिल्लाया, “मेरी नींव टूटी हुई नहीं है!”

“फिर झुकना बंद करो!” गिलहरी ने कहा. “सीधे खड़े रहो!”

“मज़बूत बनो,” बलूत के पेड़ ने कहा. “थोड़ा प्रसन्न दिखो!”

“ज़रा सोचो कि वह कितने निराश हो जायेंगे!” पक्षियों ने कहा.

“तुम कर सकते हो!” जंगली फूलों ने धीमे से कहा.

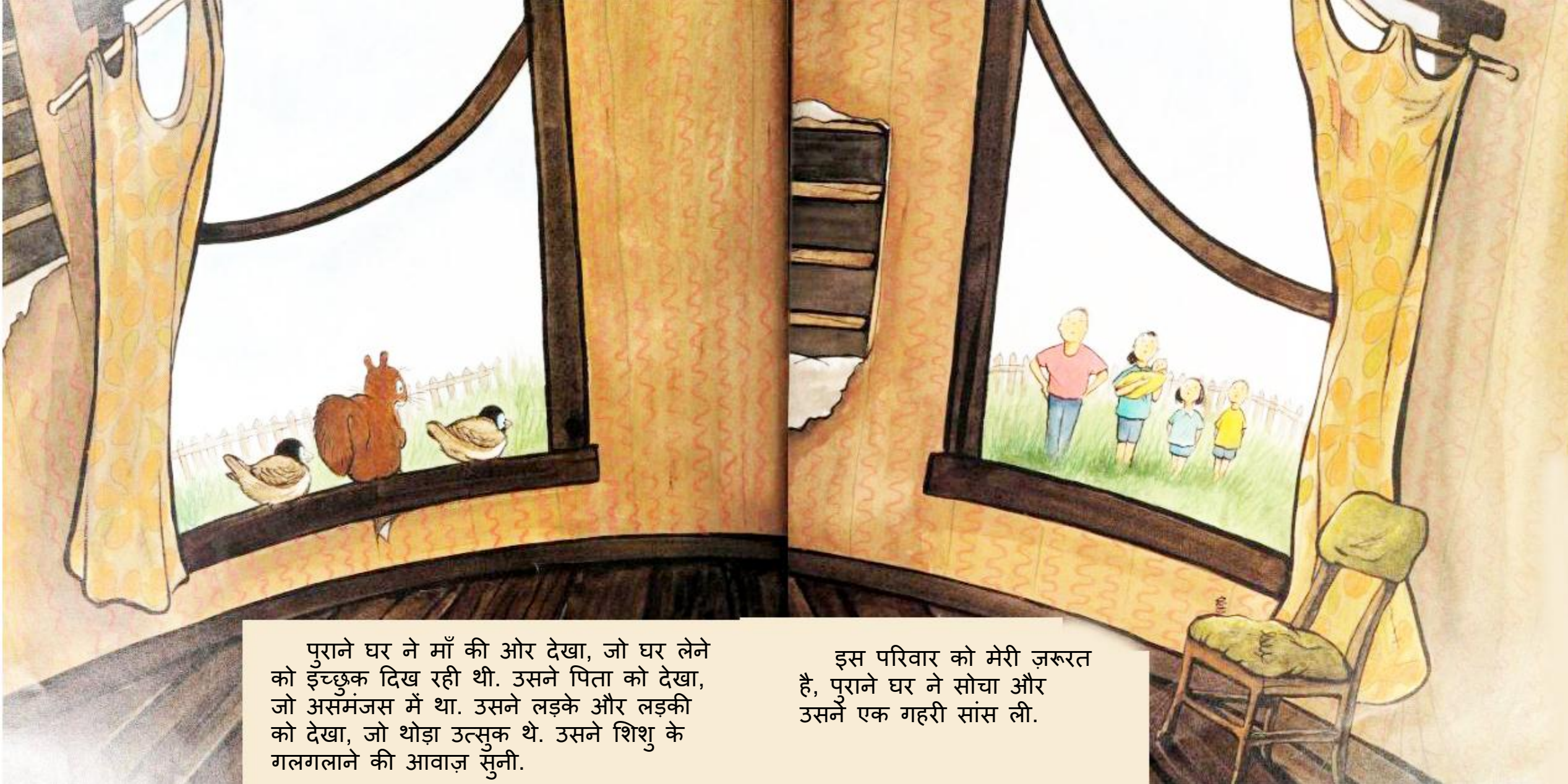

पुराने घर ने माँ की ओर देखा, जो घर लेने को इच्छुक दिख रही थी. उसने पिता को देखा, जो असमंजस में था. उसने लड़के और लड़की को देखा, जो थोड़ा उत्सुक थे. उसने शिशु के गलगलाने की आवाज़ सुनी.

इस परिवार को मेरी ज़रूरत है, पुराने घर ने सोचा और उसने एक गहरी सांस ली.

अपनी पूरी शक्ति लगाकर वह हिला-डुला, अपने को थोड़ा खींचा, थोड़ा फैलाया और फिर जितना संभव था उतना सीधा हो गया.

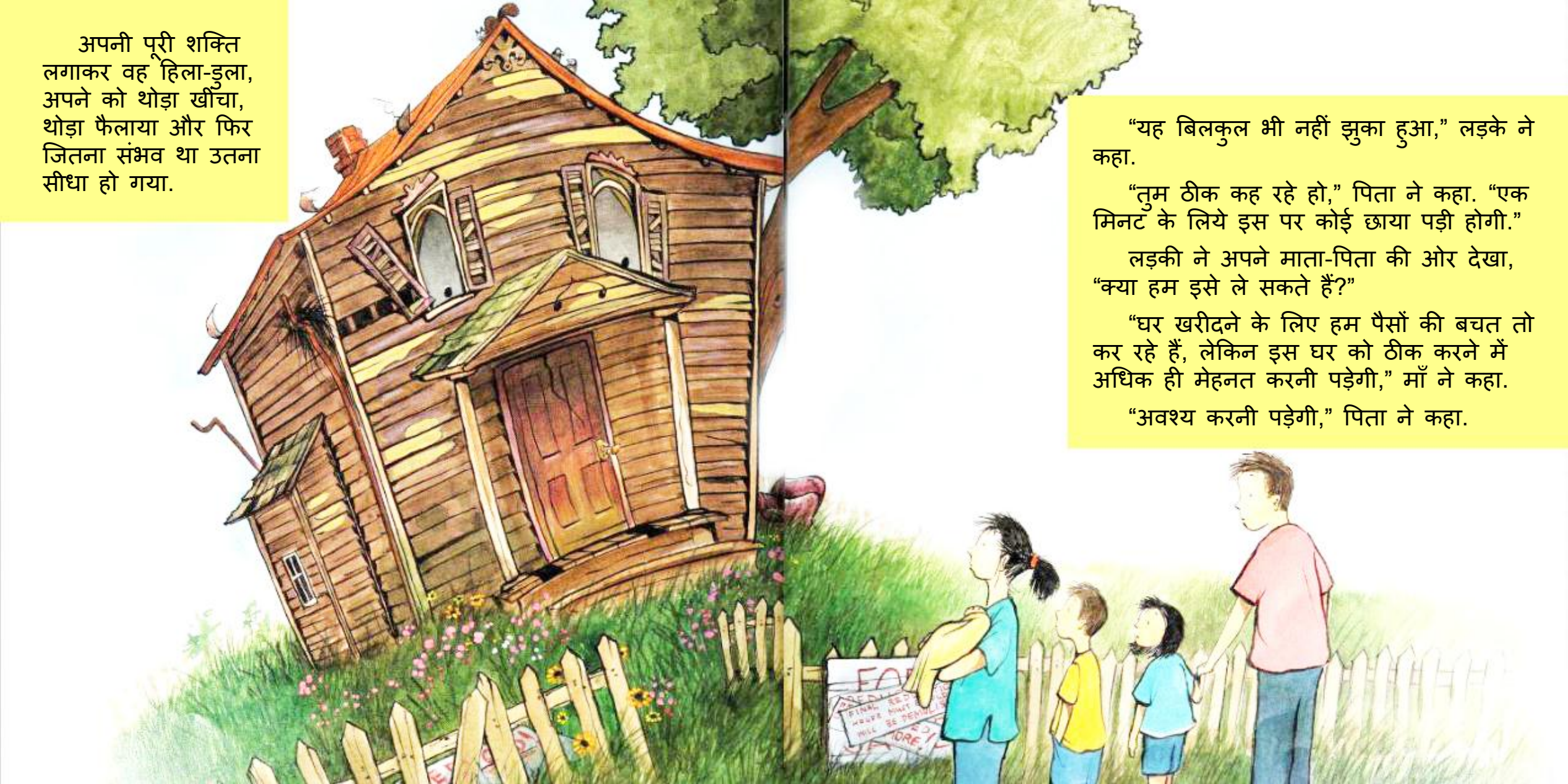

“यह बिलकुल भी नहीं झुका हुआ,” लड़के ने कहा.

“तुम ठीक कह रहे हो,” पिता ने कहा. “एक मिनट के लिये इस पर कोई छाया पड़ी होगी.”

लड़की ने अपने माता-पिता की ओर देखा, “क्या हम इसे ले सकते हैं?”

“घर खरीदने के लिए हम पैसों की बचत तो कर रहे हैं, लेकिन इस घर को ठीक करने में अधिक ही मेहनत करनी पड़ेगी,” माँ ने कहा.

“अवश्य करनी पड़ेगी,” पिता ने कहा.

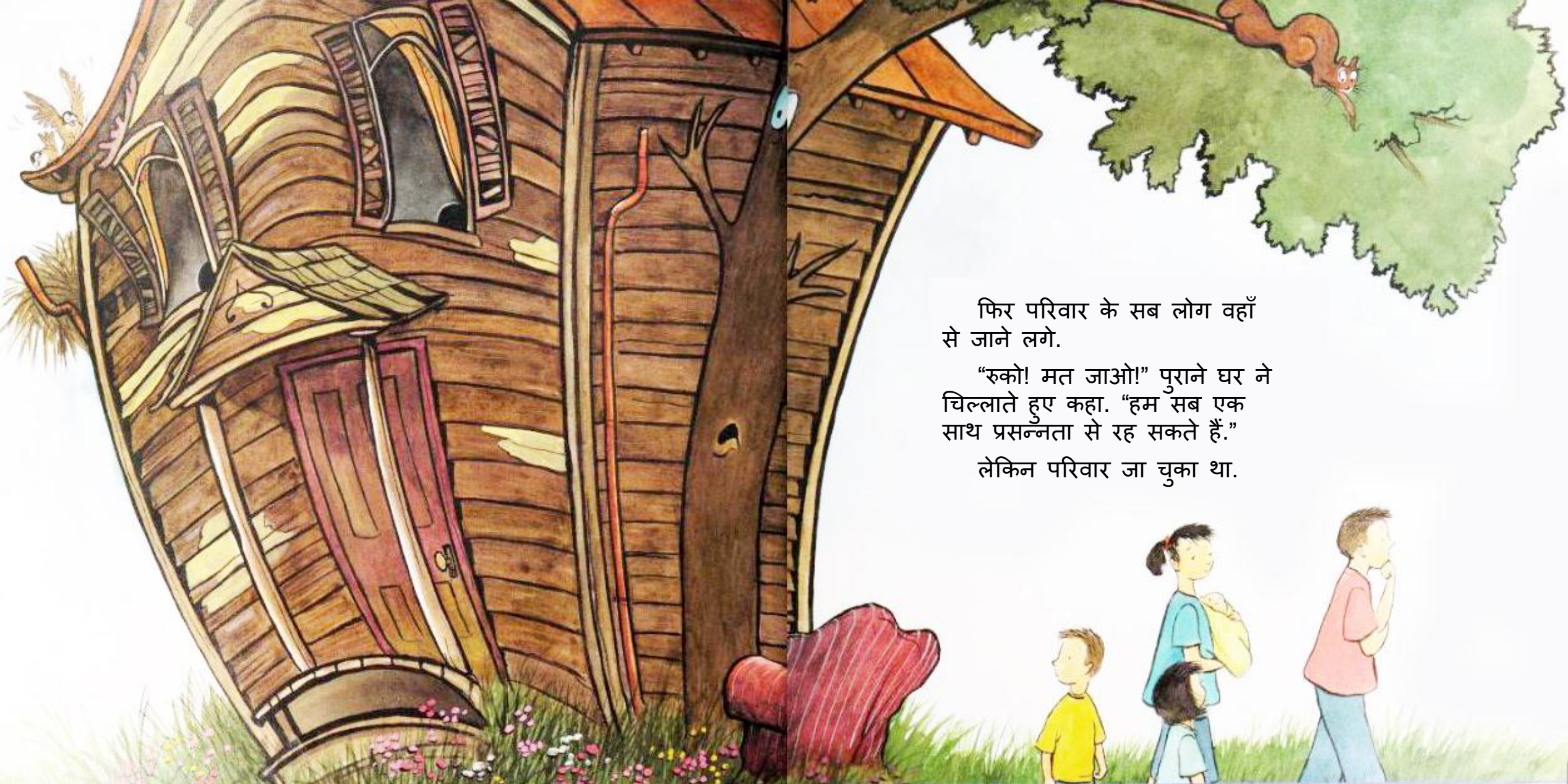

फिर परिवार के सब लोग वहाँ से जाने लगे.

“रुको! मत जाओ!” पुराने घर ने चिल्लाते हुए कहा. “हम सब एक साथ प्रसन्नता से रह सकते हैं.”

लेकिन परिवार जा चुका था.

पुराना घर बहुत दुःखी था.

“मैं उनका घर बन सकता था,” विलाप करते हुए उसने कहा. “मैं उन्हें सुरक्षित रख सकता था और सर्दी से बचा सकता था.”

“क्या तुमने देखा की वह उस परिवार के लिए दुःखी हो रहा है,” गिलहरी ने बलूत के पेड़ से कहा. “उसने अपने पर तरस खाना बंद कर दिया है.”

“मैं जानता हूँ,” बलूत बोला. “कम से कम कोई तो अच्छी बात हुई.”

एक दिन सड़क के एक छोर से गड़गड़ाने की आवाज़ सुनाई दी.

“बुलडोज़र आ रहा है!” पुराना घर रोते हुए चिल्लाया. “यही अंत है! हमारा सर्वनाश हो जाएगा!”

“हमारे घोंसलों को कौन बचाएगा?” पक्षी चिल्लाये. “हमारे बच्चे तो अभी उड़ भी नहीं सकते.’

“वह हमें कुचल डालेंगे,” जंगली फूल रोने लगे.

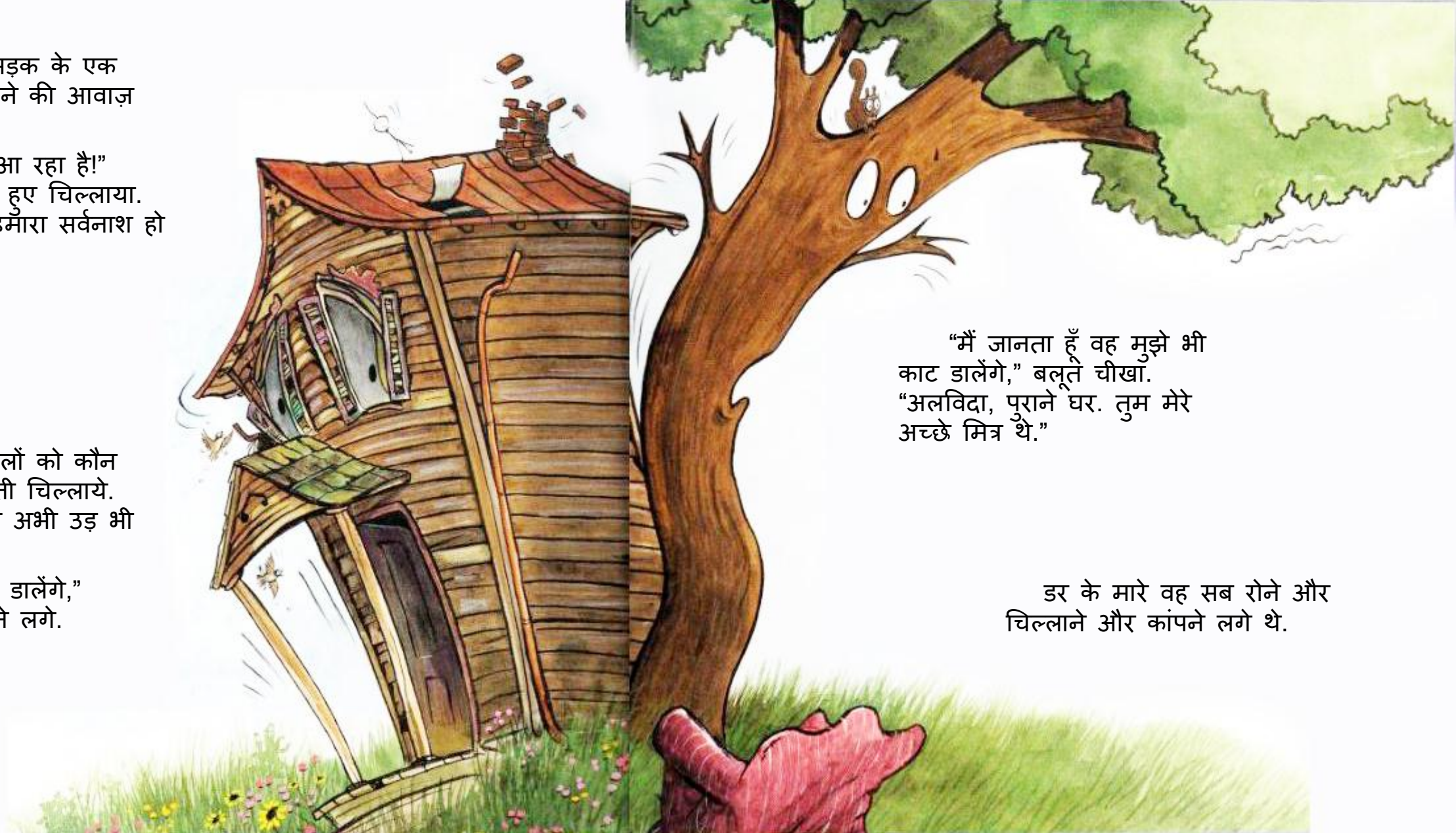

“मैं जानता हूँ वह मुझे भी काट डालेंगे,” बलूत चीखा. “अलविदा, पुराने घर. तुम मेरे अच्छे मित्र थे.”

डर के मारे वह सब रोने और चिल्लाने और कांपने लगे थे.

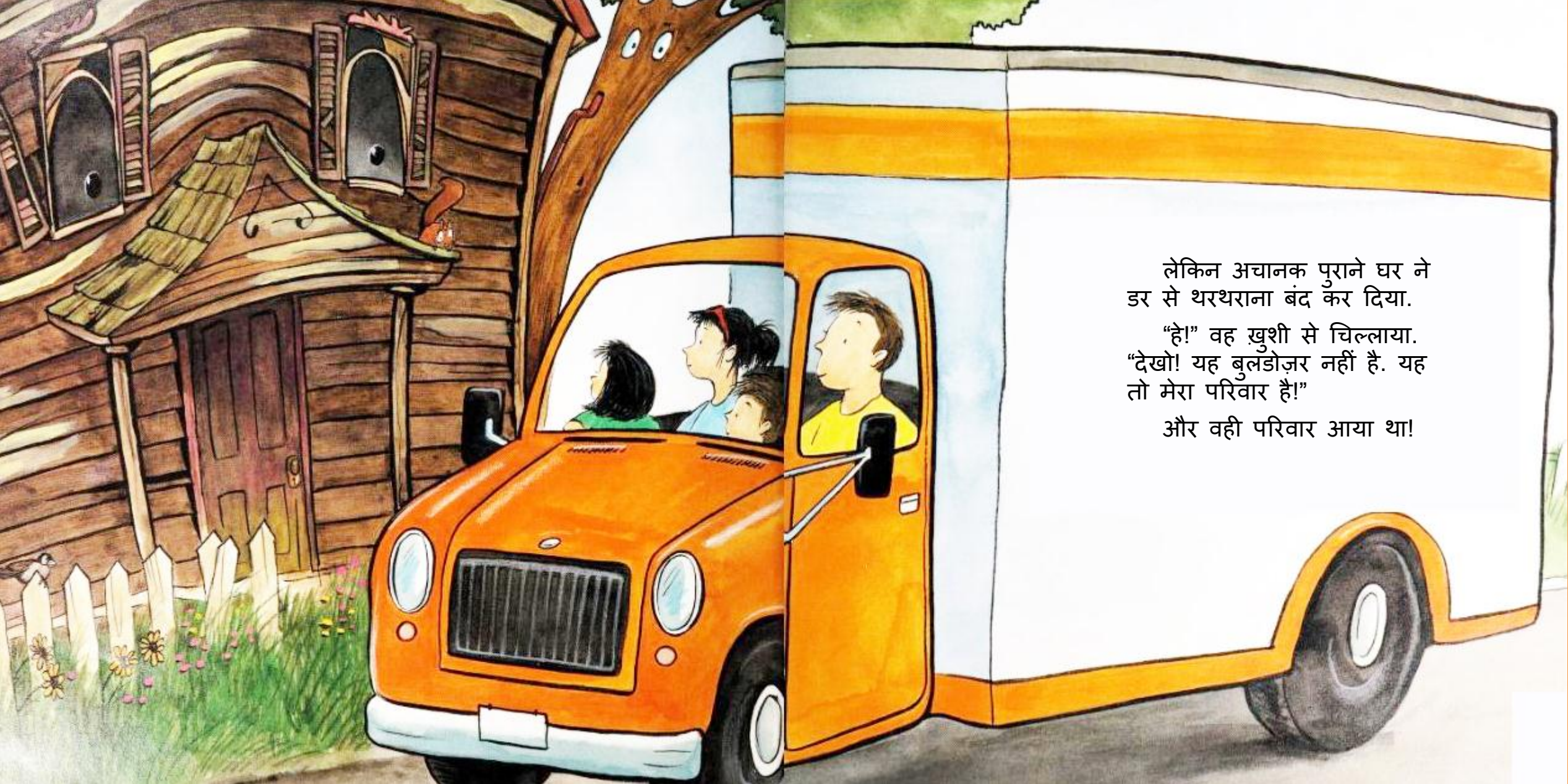

लेकिन अचानक पुराने घर ने डर से थरथराना बंद कर दिया.

“हे!” वह ख़ुशी से चिल्लाया. “देखो! यह बुलडोज़र नहीं है. यह तो मेरा परिवार है!”

और वही परिवार आया था!

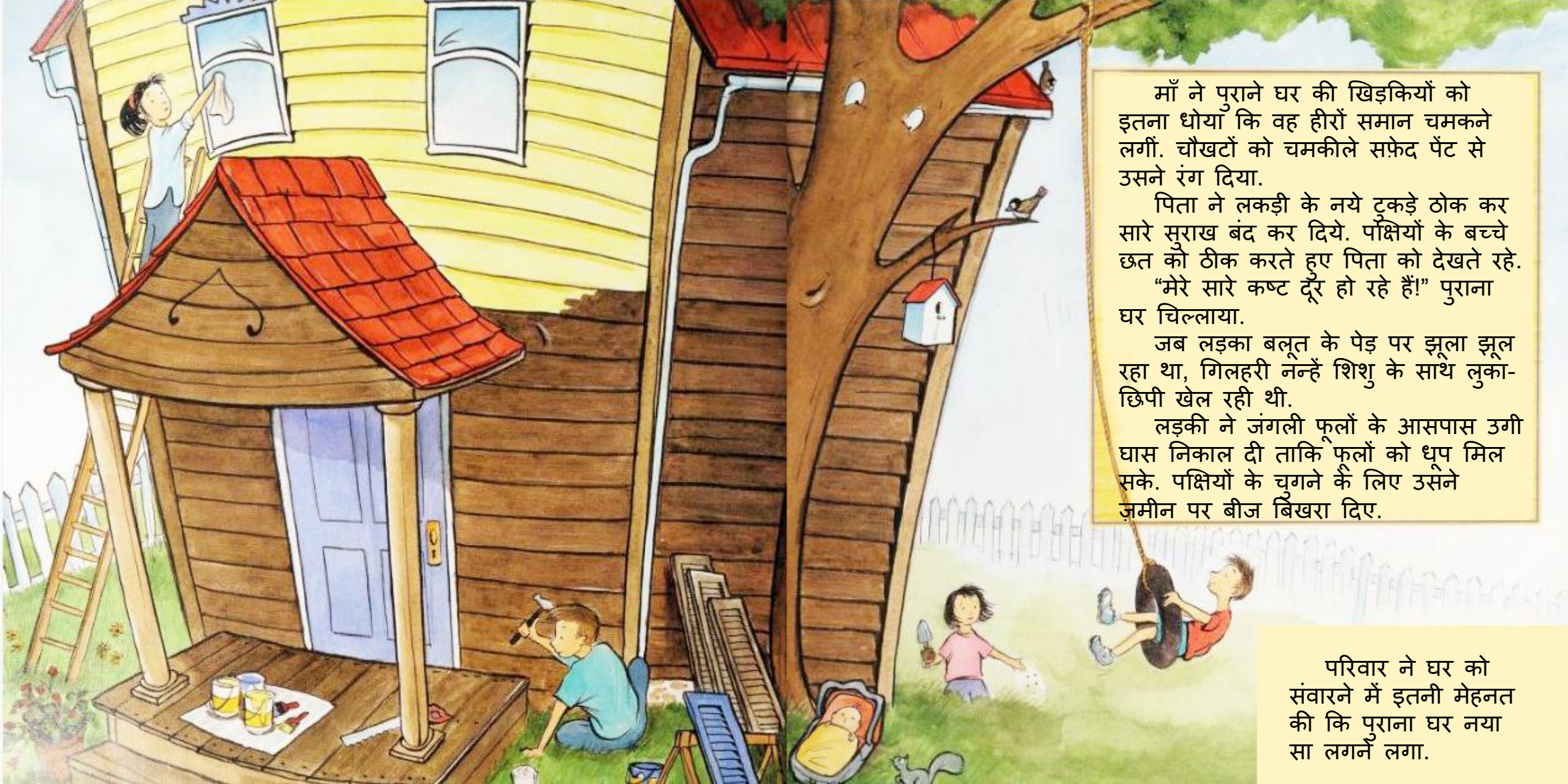

माँ ने पुराने घर की खिड़कियों को इतना धोया कि वह हीरों समान चमकने लगीं. चौखटों को चमकीले सफ़ेद पेंट से उसने रंग दिया.

पिता ने लकड़ी के नये टुकड़े ठोक कर सारे सुराख बंद कर दिये. पक्षियों के बच्चे छत को ठीक करते हुए पिता को देखते रहे.

“मेरे सारे कष्ट दूर हो रहे हैं!” पुराना घर चिल्लाया.

जब लड़का बलूत के पेड़ पर झूला झूल रहा था, गिलहरी नन्हें शिशु के साथ लुका-छिपी खेल रही थी.

लड़की ने जंगली फूलों के आसपास उगी घास निकाल दी ताकि फूलों को धूप मिल सके. पक्षियों के चुगने के लिए उसने ज़मीन पर बीज बिखरा दिए.

परिवार ने घर को संवारने में इतनी मेहनत की कि पुराना घर नया सा लगने लगा.

और अगर पुराना घर अब कभी चरमराता था तो वह दुःख के कारण नहीं, ख़ुशी के कारण ऐसा करता था. क्योंकि अब वह प्यार और प्रसन्नता से इतना भरा हुआ था कि उसके जर्जर फाटक के सामने से जाते हुए लोग अकसर कहा करते थे:

“क्या कभी तुमने इतना सुखी पुराना घर कहीं देखा है?”

समाप्त